International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

# उप–रूपकों में नायिका

**मुनेश देवी**
**पीएच०डी० शोधार्थी**
संस्कृत विभाग
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय
रोहतक

रूपक–भेदों में वर्णित नायिका भेदों के अतिरिक्त उप–रूपक भेदों में भी अनेक प्रकार की नायिकाएँ उपलब्ध होती हैं।

## नाटिका

भरत के मत से नाटिका में देवी दूती आदि परिजनों से युक्त नायिका पायी जाती है।[1]

दशरूपककार के अनुसार नाटिका में स्त्री प्रायः अर्थात् स्त्री पात्रों की प्रधानता होती हैं।[2] इसमें दो नायिकाएँ होती है। ज्येष्ठा नायिका देवी (महारानी) होती है, जो राजवंश में उत्पन्न तथा प्रगल्भ प्रकृति की होती है वह बड़ी गंभीर तथा मानिनी होती है। नायक का कनिष्ठा नायिका के साथ संगम बड़े कष्ट से होता है, वह संगम इसी ज्येष्ठा देवी के अधीन होता है।

नायिका भी ज्येष्ठा की भाँति नृपवंशजा होती है किन्तु वह मुग्धा होती है (प्रगल्भ, गंभीर या मानिनी नहीं) वह अत्यधिक मनोहर तथा सुन्दरी होती है।

रत्नावली नाटिका की ज्येष्ठा नायिका वासवदत्ता नृपवंशजा है। प्रकृति से वह गंभीर, प्रगल्भ तथा मानिनी है। रत्नावली (सागरिका) भी नृपवंशोत्पन्न है। वह मुग्धा तथा सुन्दरी है।

अन्तःपुर आदि के सम्बन्ध के कारण नायिका राजा के श्रुतिपथ तथा दृष्टिपथ में अवतरित होती है।[3]

## गोष्ठी

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

शारदातनय के मत से गोष्ठी में रूप–सौन्दर्य और लावण्य से युक्त पाँच या छः नायिकाएँ होती हैं –

रूपसौंदर्यलावण्योपेतषट् पंच नायिका।।[4]

विश्वनाथ कविराज का भी गोष्ठी लक्षण वस्तुतः इसी आशय का है। उदाहरण के लिए खैतमदनिका को ले सकते हैं।

## शिल्पक

शारदातनय के अनुसार शिल्पक में ऊढा, पुनर्भू और कन्या नायिकाएँ होती हैं जैसे माधव की नायिका मालती और कमल की नायिका कलावती।[5]

## डोम्बी

चिरन्तन आचार्यों के मत से डोम्बी की एक विशेषता छन्नानुराग अर्थात् छिपा हुआ अनुराग है। छन्नानुराग शब्द से ज्ञात होता है कि डोम्बी की नायिका छिपे हुए अनुराग वाली होती है :

छन्नानुरागगर्भाभिरुक्तिः यत्र भूपतेः।।

आवर्ज्यते मनः सा तु मसृणा डोम्बीका मता।।

शारदातनय के मत से डोम्बी में उदात्त, श्लक्ष्राने–पथ्यवाली, मन्दोत्साहा और पुरुषनायिका होती है।[6]

## श्रीगदित

शारदातनय के मत से श्रीगदित में कोई कुलांगना अपने पति के शौर्य, धैर्य आदि गुणों का सखी के सामने बखान करती है और पति के द्वारा ठगी जाने पर किसी गीत में उसको उपालम्भ देती है।[7] कहने का तात्पर्य यह है कि श्रीगदित उपरूपक में कुलांगना अथवा विप्रलब्धा नायिका होती है।

नाट्यदर्पणकार रामचन्द्र तथा गुणचन्द्र का मत भी यही है।

साहित्यदर्पणकार विश्वनाथ कविराज के मतानुसार श्रीगदित की नायिका प्रसिद्ध या प्रख्यात होती है।

कतिपय नाट्याचार्यों के अनुसार श्रीगदित में श्री वेषधारिणी नटी रंगमंच पर बैठकर कुछ गाती है और पद पढ़ती हुई दीख पड़ती है।

## भाण

अभिनवगुप्त के मत से भाण में नर्तकी नायिका होती है।[8]

## भाणिका

नाट्यदर्पणकार के अनुसार भणिका में अधिकतर विष्णु के चरित्र से युक्त स्त्रियाँ गाथा (छन्द) वर्ण और मात्राओं की रचना करती है।[9]

साहित्यदर्पणकार के मत से भाणिका की नायिका उदात्त प्रकृति की रमणी हुआ करती है। उदाहरण के लिए 'कामदत्ता' भाणिका को ले सकते हैं।

## प्रस्थानक

भरत के मतानुसार –

'सख्यासमक्षं भर्तुर्यदुद्धतं वृत्तमुच्यते।।'[10]

शारदातनय के मत से प्रस्थानक में किसी भी दासी को नायिका रूप में रखा जाता है। इसका उदाहरण 'श्रृंगारतिलक' में मिलता है।

विश्वनाथ कविराज का मत शारदातनय के मत की भाँति ही है।

## काव्य

शारदातनय के मत से काव्य में कुलांगना, चेटी आदि नायिकाएं होती हैं। उदाहरण के लिए सुग्रीवकेलनम् काव्य को लिया जा सकता है।[11]

विश्वनाथ कविराज के मत से इसमें उदात्त प्रकृति की नायिका होती है। उदाहरण के लिए ''यादवोदयम्'' काव्य को ले सकते हैं।

## प्रेक्षणक

शारदातनय के मत से प्रेक्षणक में नायिका नर्तकी होती है। उदाहरण के लिए 'त्रिपुरमर्दनम्' प्रेक्षणक को ले सकते हैं।[12]

## नाट्यरासक

शारदातनय के मत से नाट्य–रासक में आठ, बारह अथवा सोलह नायिकाएं नृत्य करती हैं।[13]

रामचन्द्र गुणचन्द्र के अनुसार नाट्क रासक में नायिकाएँ रागादि के आवेश में राजाओं के चरित्र का नृत्य द्वारा प्रदर्शन करती हैं।

विश्वनाथ कविराज के मत से नाट्यरासक की नायिका वासकसज्जा नायिका के भूप में चित्रित की जाया करती है। जैसे – 'सन्धिद्वयवती' की नायिका नर्मवती और 'सन्धि चतुष्ट्यवती' की नायिका विलासवती।

## रासक

अभिनवगुप्त के मत से रासक में अनेक नर्तकी होती हैं।[14]

रामचन्द्र गुणचन्द्र के अनुसार रासक में आठ, बारह अथवा सोलह नायिकाएं पिण्डी बन्ध आदि की रचना द्वारा नाचती हैं।

शारदातनय के मत से रासक की नायिका ख्यात् (प्रसिद्ध) नायिका होती है। शारदातनय की भांति ही विश्वनाथ का मत है। इसके उदाहरण के लिए 'मैनकाहितम्' रासक को ले सकते हैं।

## उल्लाप्य

शारदातनय के मतानुसार उल्लाप्य में हास्य श्रृंगार करुणा से युक्त और उज्ज्वल वेष वाली नायिका होती हैं।[15]

विश्वनाथ कविराज के मत से कुछ नाट्याचार्यों ने उल्लाप्य में चार नायिकाओं का चित्रण माना है। उदाहरण के लिए जैसे 'देवीमहादेवम' में।

## हल्लीस

रामचन्द्र गुणचन्द्र के मत से हल्लीस में गोपियां मण्डलाकार बनाकर नाचती हैं। इसमें अनेक नायिकाएं होती हैं।[16]

शारदातनय के मत से हल्लीस में सात, आठ या दस स्त्रीपात्र होते हैं।

शारदातनय की भाँति ही विश्वनाथ कविराज का मत है। हल्लीस के उदाहरण के लिए 'लिरैवतक हल्लीस' को ले सकते हैं।

## दुर्मल्लिका

रामचन्द्र गुणचन्द्र के अनुसार दुर्मल्लिका में कोई दूती एकान्त में ग्राम्य (अश्लील) कथाओं द्वारा युवक और युवतियों के प्रेम का वर्णन और उनके चौर्य रत का प्रकाशन करती है उसके विषय में सलाह करती है, नीच जाति की होने से धन मांगती है धन के मिल जाने पर भी और अधिक धन चाहती है।

शारदातनय के मत से दुर्मल्लिका में प्रौढ़नागर नायिका होती है।

## कल्पवल्ली

शारदातनय के अनुसार 'कल्पवल्ली' में वासकसज्जा और अभिसारिका नायिका होती है।[17]

## पारिजातक

शारदातनय के मत से पारिजातक में कलहान्तरिता नायिका होती है या भोगिनी, स्वीया, गणिका नायिका होती है। उदाहरण के लिए 'तरंगदत्त' को ले हकते हैं।[18]

## सट्टक

शारदातनय के मतानुसार सट्टक की विशेषताएं नायिका की भांति ही है। अतः यह सम्भव ही है कि नाटिका में जिस प्रकार की नायिकाएं होती हैं उसी प्रकार की नायिकाएं सट्टक में भी उपलब्ध होती हैं उदाहरण के लिए 'कर्पूरमंजरी' को ले सकते हैं।

International Journal of Research
*Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers*
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

# सन्दर्भ सूची

[1] नाट्यशास्त्र (चौखम्बा संस्करण), 20/60–61
[2] दशरूपक, 3/44
[3] दशरूपक, 3/47
[4] भावप्रकाशन, (बड़ौदा संस्करण), 9 म अधिकार, पृ० 256
[5] भावप्रकाशन, 9 म अधिकार, पृ० 257
[6] भावप्रकाशन, 9 म अधिकार, पृ० 257
[7] भावप्रकाशन, 9 म अधिकार, पृ० 258
[8] नाट्यशास्त्र (बड़ौदा संस्करण), (अभिनवभारती) प्रथम भाग, पृ० 181
[9] नाट्यदर्पण, 4/63
[10] नाट्यशास्त्र (बड़ौदा संस्करण), (अभिनवभारती) प्रथम भाग, पृ० 181
[11] भावप्रकाशन, (बड़ौदा संस्करण), 9 म अधिकार, पृ० 62–63
[12] भावप्रकाशन, (बड़ौदा संस्करण), 9 म अधिकार, पृ० 263
[13] वही, पृ० 263–264
[14] भावप्रकाशन, (बड़ौदा संस्करण), प्रथम भाग, चतुर्थ अध्याय, पृ० 181
[15] भावप्रकाशन, (बड़ौदा संस्करण), 9 म अधिकार, पृ० 266–267
[16] नाट्यदर्पण, 4/60
[17] भावप्रकाशन, (बड़ौदा संस्करण), पृ० 268
[18] वही, पृ० 268